



RAJASTHAN HIGH COURT
HIGH COURT OF JUDICATURE FOR RAJASTHAN
BENCH AT JAIPUR

D.B. Criminal Appeal (Db) No. 379/2019
CNR: RJHC020916362019 | URN: CRLAD / 666U / 2019

Balbeer S/o Badan Singh, Aged About 24 Years, R/o Badka,
Police Station Kathumar Distt. Alwar Raj.
(At Present Confined In Central Jail Alwar)

-----Accused/Appellant

Versus

State of Rajasthan, Through P.P.

-----Respondent

For Appellant(s) : Mr. Naveen Joshi, Adv.
Ms. Shreya Khandal, Adv.
Mr. Aditya Sharma, Adv.
Mr. Ajay Khedar, Adv. for
Mr. Satish Kumar Khandal, Adv.
For Respondent(s) : Mr. Rhishi Raj Singh Rathore, PP

HON'BLE MR. JUSTICE MAHENDAR KUMAR GOYAL
HON'BLE MR. JUSTICE BHUWAN GOYAL
Judgment

27/10/2026

(PER HON'BLE BHUWAN GOYAL, J.)

1. अपीलार्थी-अभियुक्त बलबीर द्वारा हस्तगत अपील अंतर्गत धारा 374(2) द.प्र.सं. के तहत विद्वान विचारण न्यायालय अपर सेशन न्यायाधीश, लक्ष्मणगढ़, जिला-अलवर द्वारा सेशन प्रकरण संख्या 31/2014, (सी.आई.एस. संख्या 198/2014), उनवानी प्रकरण राजस्थान राज्य बनाम बलबीर में पारित निर्णय एवं दण्डादेश दिनांक 27-09-2019 के विरुद्ध प्रस्तुत की गई है, जिसके द्वारा विद्वान विचारण न्यायालय द्वारा अपीलार्थी-अभियुक्त को अपराध अंतर्गत धारा 498ए भा.द.सं. के आरोप में दोषमुक्त कर अपराध अंतर्गत धारा 302 भा.द.सं. के आरोप में दोषसिद्ध किया जाकर निम्नानुसार दण्डित किया गया है:-

धारा	सजा	अर्थदण्ड	अदम अदायगी अर्थदण्ड
302 भा.द.सं.	आजीवन कारावास	25,000 / - रुपए	03 माह का कठोर कारावास



2. संक्षेप में प्रकरण के तथ्य इस प्रकार से हैं कि दिनांक 24-02-2014 को परिवादी भीमसिंह (पी.ड.-7) ने थानाधिकारी पुलिस थाना कठूमर, जिला-अलवर के समक्ष एक तहरीरी रिपोर्ट (प्रदर्श पी.-15) इस आशय की पेश की कि उसने अपनी लड़की मुनेश की शादी वर्ष 2005 में बलबीर के साथ की थी। शादी में एक लाख रुपया नकद, एक लाख के जेवर एवं पूरा सामान दिया था। शादी के कुछ ही महीने बाद से लड़की का पति बलबीर एक लाख रुपये एवं मोटरसाइकिल की मांग करता था और उसकी बेटी से कहता था कि तू ये पैसे व मोटरसाइकिल लाकर नहीं देगी तो वह उसे जान से मार देगा। जब लड़का प्रतिदिन मारपीट करता था तो वह अपनी लड़की को अपने गांव ले आया। लेकिन 15 दिन पहले लड़की की ननद गोलोदेवी व उसके पति महावीरसिंह यह कहकर लाए थे कि अब आपकी लड़की के साथ कोई मारपीट नहीं होगी, लेकिन यहां लाकर कल रात गोलोदेवी, उनका पति महावीर, लड़का बलबीर, पूरनसिंह, लड़के के ताऊ का लड़का उदय मास्टर, उसके भाई विजय, विक्रम, सुनीता, जग्गो, लड़के की मां लक्ष्मी ने कल रात मीटिंग करके उसकी बेटी मुनेश को चिमटा, धारिया एवं डंडों से जान से मार दिया और उसकी दो छोटी-छोटी बेटीयों एवं नन्हें बेटे को अनाथ कर दिया इत्यादि.....।

3. उक्त तहरीरी रिपोर्ट (प्रदर्श पी.-15) के आधार पर पुलिस थाना-कठूमर, जिला अलवर द्वारा प्रथम सूचना रिपोर्ट संख्या 60/2014, अन्तर्गत धारा 147, 148, 149, 302, 498ए भा.दं.सं. में दर्ज कर अनुसंधान प्रारंभ किया गया। बाद अनुसंधान अपीलार्थी-अभियुक्त के विरुद्ध अपराध अन्तर्गत धारा 498ए, 302 भा.दं.सं. में आरोप पत्र न्यायालय सिविल न्यायाधीश (क.ख.) एवं न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम वर्ग, कठूमर (अलवर), राजस्थान के समक्ष पेश किया गया है, जिस पर विचारण न्यायालय द्वारा प्रसंज्ञान लिया जाकर प्रकरण दर्ज रजिस्टर किया गया, जिस पर मामला सेशन न्यायालय द्वारा विचारणीय होने से उसे विधिवत सुनवाई हेतु न्यायालय अपर सेशन न्यायाधीश, लक्ष्मणगढ़, (अलवर), राजस्थान को कमिट कर प्रेषित किया गया।

4. विद्वान विचारण न्यायालय ने तत्पश्चात् बहस चार्ज सुनकर





अपीलार्थी-अभियुक्त के विरुद्ध धारा 302, 498ए भा.दं.स. में दण्डनीय अपराधों के आरोप विरचित कर उसे सुनाए व समझाए गए तो अभियुक्त ने आरोप से अस्वीकार कर अन्वीक्षा चाही, जिस पर अभियोजन पक्ष की ओर से मौखिक साक्ष्य में गवाहान पी.डब्ल्यू-1 लगायत पी.ड.-19 के बयान लेखबद्ध करवाये गये तथा मौखिक साक्ष्य के समर्थन में दस्तावेजात प्रदर्श पी-1 लगायत प्रदर्श पी-31 एवं आर्टिकल 1 लगायत 5 पेश कर प्रदर्शित करवाए गए।

5. विद्वान विचारण न्यायालय द्वारा तत्पश्चात् अभियुक्त को धारा 313 दं.प्र.सं. के तहत परीक्षित किया गया, जिसमें अभियुक्त ने अभियोजन साक्ष्य को गलत होना बताते हुए उसके द्वारा कोई अपराध नहीं करना एवं उसे झूठा फंसाया जाना कथन करते हुए उसका घर पर नहीं होकर खेत पर होना कथन किया एवं दस्तावेजी साक्ष्य में दस्तावेजात प्रदर्श डी.-1 लगायत डी.-15 पेश कर प्रदर्शित करवाए गए।
6. विद्वान विचारण न्यायालय द्वारा उभयपक्षों को सुनने के पश्चात् अपीलार्थी-अभियुक्त बलबीर को अपराध अन्तर्गत धारा 302 भा.दं.सं. में उपरोक्त अनुसार दण्डित किया गया, जिससे व्यथित होकर अपीलार्थी-अभियुक्त के द्वारा हस्तगत अपील उसे आरोपित अपराध से दोषमुक्त किए जाने हेतु प्रस्तुत की गई है।
7. विद्वान अधिवक्ता अपीलार्थी-अभियुक्त का कथन है कि अपीलार्थी-अभियुक्त निर्दोष है उसे इस प्रकरण में झूठा फंसाया गया है, उसने ना तो मृतका मुनेश के साथ मारपीट की है, ना ही गला दबाकर उसकी हत्या की है, वास्तव में मृतका को मिर्गी का दौरा आकर गिरने से चोटें एवं उसकी मृत्यु हुई है। उनका यह भी कथन है कि शव परीक्षण रिपोर्ट से भी मृतका की मृत्यु गला दबाने अथवा चोटों से होना प्रमाणित नहीं हुआ है। उनका यह भी कथन है कि किसी भी साक्षी ने अपीलार्थी-अभियुक्त का वक्त घटना घटनास्थल पर उपस्थित होना एवं उसे मुनेश के साथ मारपीट करते देखना कथन नहीं किया है।

उनका यह भी कथन है कि घटना के समय वह अपने खेत पर गया था, जिसकी पुष्टि अनुसंधान अधिकारी के कथनों से हुई है। उनका यह भी कथन है कि प्रकरण में, बरामदगी के साक्षीगण के





पक्षद्रोही घोषित होने से बरामदगी कार्यवाही भी संदेह से परे प्रमाणित नहीं हुई है, जिससे परिस्थितियों की श्रृंखला अपूर्ण होने से अभियोजन कहानी प्रमाणित नहीं हुई है। उनका अंत में कथन है कि विद्वान विचारण न्यायालय ने उक्त सभी बिंदुओं पर सूक्ष्मता से एवं गहनता से विचार किए बिना ही, आलौच्य आदेश दिनांक 27-09-2019 पारित किया है, जिससे उक्त आदेश विधिसम्मत नहीं होने से अपास्त किए जाने योग्य है, अतः अपील अपीलार्थी-अभियुक्त स्वीकार करते हुए आलौच्य आदेश दिनांक 27-09-2019 अपास्त कर अपीलार्थी-अभियुक्त को आरोपित अपराध से दोषमुक्त किया जावे।

8. विद्वान लोक अभियोजक द्वारा प्रस्तुत अपील का विरोध करते हुए कथन किया गया कि विद्वान विचारण न्यायालय ने पत्रावली पर प्रस्तुत साक्ष्य का अत्यंत सूक्ष्मता से एवं गहनता से विश्लेषण कर जो आलौच्य आदेश दिनांक 27-09-2019 पारित किया है, उसमें किसी प्रकार की कोई विधिक एवं तथ्यात्मक त्रुटि नहीं है, अतः अपील अपीलार्थी-अभियुक्त अस्वीकार कर खारिज की जावे।
9. हमने अपीलीय पत्रावली का मय रिकॉर्ड सम्मानपूर्वक अवलोकन किया एवं उभयपक्ष के तर्कों पर गंभीरतापूर्वक मनन किया।
10. हस्तगत प्रकरण में अभियोजन पक्ष का यह केस रहा है कि अपीलार्थी-अभियुक्त ने दिनांक 23/24.02.2014 की मध्य रात्रि में किसी समय मृतका मुनेश के साथ चिमटा, धारिया, डंडे के साथ मारपीट कर एवं गला दबाकर उसकी हत्या कारित की ?
11. अभियोजन पक्ष द्वारा उपरोक्त अभियोजन कहानी के समर्थन में साक्षी पी.ड.-2 श्रीमती रामा, साक्षी पी.ड.-4 गुटयारी, साक्षी पी.ड.-5 मेदी जो कि मृतका के पड़ोसी हैं उन्हें बतौर प्रत्यक्षदर्शी साक्षी न्यायालय में परीक्षित करवाया गया है, किंतु उक्त तीनों साक्षीगण अभियोजन पक्ष की प्रार्थना पर पक्षद्रोही घोषित हुए हैं एवं उन्होंने अपने-अपने बयानों में घटना के दिन बलबीर को मुनेशी के साथ मारपीट करते नहीं देखना एवं पुलिस बयान क्रमशः प्रदर्श पी.-8, प्रदर्श पी.-9 व प्रदर्श पी.-10 का ए से बी भाग पुलिस को नहीं देना कथन किया है एवं प्रकरण में अन्य प्रस्तुत गवाहान पी.ड.-6 बच्चू सिंह, गवाह पी.ड.-7



भीमसिंह, गवाह पी.ड.-12 राजकुमारी एवं गवाह पी.ड.-14 नरेश घटना के प्रत्यक्षदर्शी साक्षी नहीं है, जिससे प्रकरण परिस्थितिजन्य साक्ष्य पर आधारित है।

12. परिस्थितिजन्य साक्ष्य के मामलों में माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने **शरद बिरदीचन्द सारदा बनाम महाराष्ट्र राज्य AIR 1984 SC 1622** में किसी आरोपी के खिलाफ मामले को साबित करने हेतु निम्न पांच शर्तों का पूरा होना आवश्यक बताया है:-

- (1) जिन परिस्थितियों से अपराध का निष्कर्ष निकाला जाना है, उन्हें प्रकरण में पूरी तरह से स्थापित किया गया हो;
- (2) इस प्रकार स्थापित तथ्य केवल अभियुक्त के अपराध की परिकल्पना के अनुरूप होने चाहिए; अर्थात् उन्हें किसी अन्य परिकल्पना पर स्पष्टीकरण नहीं दिया जाना चाहिए, सिवाय इसके की अभियुक्त दोषी है;
- (3) परिस्थितियां निर्णायक पद्धति एवं प्रकृति की होनी चाहिए;
- (4) उन्हें सिद्ध की जाने वाली परिकल्पना को छोड़कर हर सम्भावित परिकल्पना को बाहर कर देना चाहिए;
- (5) साक्ष्यों की श्रृंखला इतनी पूर्ण होनी चाहिए कि अभियुक्त की बेगुनाही के अनुरूप निष्कर्ष के लिए कोई उचित आधार ना छूटे और यह दर्शाया जावे कि सभी मानवीय सम्भावनाओं में कार्य अभियुक्त द्वारा किया गया होगा;

13. माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा उक्त न्यायिक दृष्टांत में प्रतिपादित सिद्धांत के परिप्रेक्ष्य में यदि पत्रावली पर प्रस्तुत परिस्थितिजन्य साक्ष्य का अवलोकन करें तो अपीलार्थी-अभियुक्त के जुआं खेलने, शराब पीने, घर का सामान बेचने की बात को लेकर उसके एवं मृतका के मध्य विवाद होने से, उसके द्वारा मृतका मुनेश के साथ घटना के दिन चिमटा, धारिया व डण्डे से मारपीट करना बताया गया है, किंतु प्रकरण में गवाह पी.ड.-1 देवीराम एवं गवाह पी.ड.-5 मेदी जो कि मृतका के पड़ोसी हैं उन्होंने अपने-अपने बयानों में मुनेश व बलबीर का प्रेमपूर्वक रहना एवं उनमें कोई विवाद नहीं होना कथन किया है। गवाह पी.ड.-7 भीमसिंह जो कि मृतका का पिता है उसने अपनी प्रतिपरीक्षा में बलबीर जुआं खेलता हो और शराब पीता हो, तो उसे पता नहीं होना स्वीकार





किया है एवं यह भी स्वीकार किया है कि उसके लड़के नरेश की शादी 4 फरवरी, 2014 में हुई थी, उस शादी में उनके यहां बलबीर और मुनेश राजीखुशी आए थे, तब मुनेश ने उससे, बलबीर के बाबत कोई शिकायत नहीं की थी। गवाह पी.ड.-6 बच्चू सिंह ने भी अपनी प्रतिपरीक्षा में यह स्वीकार किया है कि वह नरेश की शादी में गया था, नरेश की शादी में मुनेश ने बलबीर के बाबत कोई शिकायत नहीं की थी, बलबीर और मुनेश गांव बड़का में राजीखुशी रहते थे। गवाह पी.ड.-15 राजेन्द्र एवं गवाह पी.ड.-16 बोदन ने भी अपने-अपने बयानों में बलबीर द्वारा शराब पीकर अपनी पत्नी के साथ मारपीट करने की बात गलत होना कथन किया है।

हस्तगत प्रकरण में जहां तक घटना के दिन अपीलार्थी-अभियुक्त द्वारा मृतका मुनेश के साथ चिमटा, धारिया व डंडे से मारपीट करने का संबंध है तो प्रकरण में अपीलार्थी-अभियुक्त से ना तो अनुसंधान के दौरान कोई चिमटा बरामद हुआ है, ना ही धारिया बरामद हुआ है एवं पोस्टमार्टम रिपोर्ट प्रदर्श पी.-17 से भी मृतका के शरीर पर धारदार हथियार एवं डण्डे से चोटें आने की पुष्टि नहीं हुई है, यद्यपि प्रकरण में अपीलार्थी-अभियुक्त की सूचना पर उससे घटना में प्रयुक्त एक खून आलूदा लकड़ी का डंडा, साक्षी पी.ड.-1 देवीराम व साक्षी पी.ड.-3 खुशीराम की उपस्थिति में जरिए फर्द प्रदर्श पी-5 जब्त करना बताया गया है, किंतु उक्त फर्द के भी दोनों गवाह देवीराम एवं गवाह खुशीराम अभियोजन पक्ष की प्रार्थना पर पक्षद्रोही घोषित हुए हैं एवं उन्होंने अपने-अपने बयानों में अपीलार्थी-अभियुक्त से पुलिस द्वारा डंडा बरामद नहीं करना कथन किया है एवं प्रकरण में उक्त डंडे पर लगे खून की एफ.एस.एल. जांच भी नहीं करवाई गई है, साथ ही शव परीक्षण रिपोर्ट प्रदर्श पी-17 के अवलोकन से भी मृतका मुनेश की मृत्यु, चोटों से नहीं होकर, दम घुटने से होना प्रकट हुआ है, जिससे प्रकरण में मृतका व अपीलार्थी-अभियुक्त के मध्य विवाद होने एवं उसके द्वारा घटना के दिन मृतका के साथ मारपीट करने बाबत अभियोजन कहानी युक्तियुक्त संदेह से परे सिद्ध नहीं हो पाई है।



14. हस्तगत प्रकरण में अभियोजन पक्ष द्वारा मृतका मुनेश की गला दबाकर हत्या होने के संदर्भ में साक्षी पी.ड.-9 डॉ० कुलदीप सिंह वर्मा को न्यायालय में परीक्षित करवाया गया है, उक्त गवाह ने अपनी मुख्य परीक्षा में उसका दिनांक 24-02-2014 को सी.एच.सी. कठूमर में चिकित्सा अधिकारी के पद पर कार्यरत होकर, उस दिन थाना कठूमर के प्रतिवेदन पर मृतका मुनेश के शव का परीक्षण करना एवं बोर्ड की राय में मृतक मुनेश की मृत्यु दम घुटने से होना कथन किया गया है, किंतु उक्त गवाह ने अपनी प्रतिपरीक्षा में यह स्वीकार किया है कि मृतका के मुंह-नाक पर कोई दबाने के लक्षण नहीं मिले थे एवं प्रदर्श पी-17 में बाह्यरूप एसफिक्सिया के भी कोई लक्षण नहीं मिले थे। अनुसंधान अधिकारी पी.ड.-19 दामोदरसिंह ने भी अपनी प्रतिपरीक्षा में यह स्वीकार किया है कि मुताबिक फर्द सूरते लाश मृतका प्रदर्श पी.-11 के अनुसार मुंह और नाक को किसी ऑब्जेक्ट से दबाने के निशान नहीं मिले थे एवं दम घुटने वाली कोई वस्तु भी अनुसंधान में नहीं आई थी। प्रकरण में यह भी महत्वपूर्ण है कि अनुसंधान के दौरान मृतका का गला दबाने हेतु प्रयोग में ली गई सामग्री यथा तकिया, कपड़ा, प्लास्टिक बैग आदि भी जब्त नहीं किए गए हैं एवं शव परीक्षण रिपोर्ट में मृतका के गले पर हाथ से दबाने के निशान होना अंकित नहीं है।

15. माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने अपने न्यायिक दृष्टांत **(2009) 14 Supreme Court Cases 415, Subramaniam Vs. State of Tamil Nadu & Another** के पैरा संख्या 13 से 22 में यह अंकित किया है कि—

13- The learned author defines application of the term 'suffocation' to that form of death that results from the exclusion of air from the lungs, by means other than that of the compression of the neck. One of the types of 'suffocation' is smothering or closure of the mouth and the nostrils. With regard to smothering or closure of the mouth and nostrils, it was stated:

"(i) Smothering or closure of the mouth and nostrils
Infants are often accidentally smothered by being overlaid by their mothers when they are drunk. This is more common among the lower classes of women in England. In India, such cases are rare, as infants are generally not allowed to sleep in the same bed with their mothers, but are





placed in separate cradles. However, they are sometimes smothered by inexperienced mothers who press them too closely to the breast when suckling. A common method of killing infants, children and weak adults is to close the mouth and the nostrils by means of the hand, bedclothes, soft pillows or mud, etc.

Cases have been recorded of adults being accidentally smothered by plaster of paris at the time of taking a cast or mould, or by falling face downwards into vomited matter, flour, cement, ashes, sand or mud, especially when drunk or during an epileptic fit.

Plastic bag suffocation has been reported from various countries. Deaths have occurred in course of autoerotic misadventures by use of plastic bag placed over the head. Some addicts use plastic bags in a similar manner to sniff or inhale narcotic vapours or anaesthetics. Chemical analysis is essential in all the cases of plastic bag asphyxia occurring in teenagers; for otherwise the proper diagnosis of poisoning by inhalation of narcotic vapours may be missed. A thorough search of the scene for the solvents (acetone, benzene, toluene, naphtha, carbon tetrachloride) should also be made and the relatives questioned."

It was furthermore stated that choking or obstruction of the airpassages from within is mostly accidental.

14- With regard to the post-mortem appearance, it is stated in Modi:

"Post-mortem appearances

Post-mortem appearances are external and internal

(i) *External Appearance*

The external appearance may be due to the cause producing suffocation, or to asphyxia.

(a) Appearance due to the Cause Producing Suffocation: In homicidal smothering, affected by the forcible application of the hand over the mouth and the nostrils, bruises and abrasions are often found on the lips and on the angles of the mouth, and alongside the nostrils. The inner mucosal surface of the lips may be found lacerated from pressure on the teeth. The nose may be flattened, and its septum may be fractured from pressure of the hand, but these signs are, in Modi's experience, very rare. There may be bruises and abrasions on the cheeks and the molar regions, or on the lower jaw, if there has been a struggle. Rarely, fracture or dislocation of the cervical vertebrae may occur if the neck has been forcibly wrenched in an attempt at smothering with the hand. No local signs of violence will be found, if a soft cloth or pillow has been used to block the mouth and nostrils.

In compression of the chest, external signs of injury may not be present, but the ribs are usually fractured on both the sides. In homicidal





compression of the chest brought about by the hands or knees of a murderer or by some other hard material, bruises and abrasions, symmetrical on both sides, are usually found on the skin together with extravasation of the blood in the subcutaneous tissues. Rarely, along with the ribs the sternum is also fractured. It should, however, be remembered that the traumatic asphyxia produces variable findings. In a fair person, purple suffusion of skin above the point of compression is apparent in severe fixation of the chest by mechanical compression. There may not be any external or internal signs where the pressure is slight or evenly distributed.

(b) Appearance due to asphyxia: The face may be pale or suffused. The eyes are open, the eyeballs are prominent, and the conjunctivae are congested and sometimes there are petechial hemorrhages. The lips are livid, and the tongue sometimes protruded. Bloody froth comes out of the mouth and the nostrils. The skin shows punctiform ecchymoses with lividity of the limbs. Rupture of the tympanum may occur from a violent effort at respiration.

(ii) Internal Appearance

Rags, mud or any other foreign matter may be found in the mouth, throat, larynx or trachea, when suffocation has been caused by the impaction of a foreign substance in the air-passages. It may also be found in the pharynx or the oesophagus. The mucous membrane of the trachea is usually bright red, covered with bloody froth and congested. The lungs are congested and emphysematous. They may be lacerated or contused even without any fracture of the rib, if death has been caused by pressure on the chest. Punctiform subpleural ecchymoses (Tardieu spots) are usually present at the root, base, and the lower margins of the lungs, but they are not characteristic of death by suffocation, as they may also be present in asphyxia death from other causes. They are also found on the thymus, pericardium, and along the roots of the coronary vessels. The lungs may be found quite normal, if death has occurred rapidly. The right side of the heart is often full of dark fluid blood, and the left empty. The blood does not readily coagulate; hence, wound caused after death may bleed. The brain is generally congesting, and so are the abdominal organs, especially the liver, spleen and kidneys"

15- In the author's opinion, to come to a definite conclusion it is very essential to look for evidences of violence in the shape of external marks surrounding the mouth and nostrils or on inside the mucosal surface, or on the chest. According to the learned author, circumstantial evidence should always be taken into consideration to establish the proof of death from suffocation.

16- In regard to the medico-legal question as to whether the suffocation was suicidal, homicidal or accidental, the learned author stated:

"(ii) whether the suffocation was suicidal, homicidal or accidental ?





.....Homicidal suffocation by pressure on the chest is sometimes resorted to in India, but in the case of adults, it is often combined with smothering or throttling, and it is usually an act of more than one person.....

A form of homicidal suffocation practiced in Northern India is known as 'Bansdola', although it is not so common now as it used to be formerly. In this form, the victim's chest is squeezed so forcibly between two strong wooden planks or bamboos, one being placed across the upper part of the chest and the other across the back of the shoulders, that the respiratory act is interfered with, the muscles are lacerated and the ribs are fractured. If the force applied is very severe, the lungs may be crushed and lacerated.

Burying alive used to be resorted to in India as a form of punishment and lepers used to be sometimes buried alive.

In the case of infants dying under suspicious circumstances and afterwards exhumed, a question may arise as to whether they had been buried alive. The presence of fine dust in the oesophagus and stomach is a convincing proof of the infant having been buried alive. In a burial after death, fine dust may be found in the upper air-passages, but not in the oesophagus or the stomach.

Accidental suffocation is frequent and is produced as described above and by being buried under the sand or the earth while digging deep pits; here the respiratory tract is packed with sand or earth."

17- We wish the expert would have been forthright in her view in regard to the cause of death. A different conclusion was required to be arrived at keeping in view the fact that a large number of symptoms were absent which ordinarily point out to the cause of death of asphyxia by smothering. Most of the symptoms noticed by Modi should have remained present. There was frothy fluid discharge of blood from mouth and nose. However, no frothy fluid blood was found on the pillow. It may not be imperative but that could have been a lead to a fairly definite opinion. It is in the aforementioned situation, the learned Sessions Judge opined that death might not have been caused by asphyxia, stating:

"In the present case there is reasonable doubt in regard to the cause of death of the deceased and it is not safe to rely upon the evidence of P.W. 8 solely for the purpose of coming to the conclusion that the deceased's death is proved by the prosecution to be homicidal. While viewing on that basis, P.W. 10 the Medical Officer in her evidence had mentioned as detailed below:

Generally during the time of asphyxia the eyes will be open and the tongue will be protruding outside. Further the right side of the heart might be full of blood and the left side being empty. Further at the time of asphyxia, the kidneys also should be found distended and likewise the brain. Generally on account of asphyxia and death is being caused Tardien sport should be in the eyes. Further at the





time of asphyxia there should be hybakia should be found. (Hybakia means the oxygen particles will be lesser in number in the blood). Further the face and head will be found distended Synochiam with numerus petichal should be found. Further there should be mucous in the mouth and throat. Further Generally during the time of asphyxia, there should be alviovis and idimafluid in the lungs. Further there should be camaris with collappus with intersavin enpiceomia. But the aforesaid signs were not found in the dead body and therefore there was no opportunity for the deceased to die on account of asphyxia.

18- The learned judge noticed that P.W.10 was specific in her statement that paleness in the brain could not have been noticed as it had liquefied by that time. It was also found that P.W. 10 had deviated from her earlier opinion and stated that it was not correct to say that no opinion of cerebral anoxia could be given or arrived at in the case of liquefaction of the brain. No saliva, blood and tissue cells were found in the pillow; no scratches, distinct nail marks, or laceration of the soft parts of the victim's face was noticed. It was not brought to notice that pillow was a soft one or not. No bruising or laceration was found in the lips, gums and tongue.

19- The conduct of the accused that he had all along been present and the opinion of the Doctor did not satisfy the tests laid down in the authoritative book of Modi, it was held:

"Further the evidence of Medical Officer P.W. 10 having mentioned that the reason for the death of the wife of the accused was on account of asphyxia but the same is discrepant with the Medical Book. Further in the report Ex. P.6 no such symptom had been mentioned. Hence just because the accused and his wife happened to be at the same place and on that ground it cannot be said that the accused had committed the aforesaid criminal offence as mentioned on behalf of the prosecution."

20- The High Court, on the other hand, while noticing only a part of the said tests proceeded on the premise that those symptoms spoken to by her in her evidence were not noted by her in the post-mortem report. Apart from the fact that the quotation from Modi does not take into consideration all the symptoms noted therein, a wrong test was applied that all the features in a given case would not be available where the body is burnt after killing, which is not the case herein. Despite noticing that some of the usual symptoms that would be available in the case of death due to asphyxia by smothering were necessary still a purported formal opinion was arrived at that the prosecution had definitely established the cause of death.

21- A similar question came up for consideration in Mohd. Zahid vs. State of T.N.¹, wherein the Doctor differed with a well known tests of medical jurisprudence. The suggestion of the defence with reference thereto cannot be lightly brushed aside particularly when post-mortem was conducted after a few days. P.W. 10 did not refer to any other authoritative text to support her opinion. This Court in the fact of that case opined: (SCC p. 126, paras 23-24)





"**23**....A cautious reading of this part of PW-8's evidence shows that in one part PW-8 admits that the one and only method by which a medical examiner can conclude that the cause of death was due to cerebral anoxia is by noticing the pale appearance of the brain. She also specifically admits that there will not be any other change in the brain in the case of cerebral anoxia and since the brain had become liquefied, it cannot be stated if the brain had become pale or not. She is also specific in her statement that there was no other sign by which she could say that was cerebral anoxia. Stopping for a while at this stage and examining PW-8's evidence, one finds that at the time of the post mortem examination, Jabeena's brain had liquefied and there was no way by which PW-8 could have noticed the paleness in the brain. However, in the latter part of her evidence, she deviates from her earlier opinion and states that it is not correct to say that no opinion of cerebral anoxia could be given or arrived at in the case of liquefaction of the brain. These two statements are diametrically opposed to each other and we find it rather difficult to accept this part of her evidence which is so self-contradictory. In our view, the opinion of PW-8 that the cause of death as recorded by her is due to the cumulative effect of asphyxia and cerebral anoxia, is rather difficult to accept.

24- We are aware of the fact that sufficient weightage should be given to the evidence of the doctor who has conducted the post mortem, as compared to the statements found in the text books, but giving weightage does not ipso facto mean that each and every statement made by a medical witness should be accepted on its face value even when it is self-contradictory. This is one such case where we find that there is a reasonable doubt in regard to the cause of death of Jabeena and we find it not safe to rely upon the evidence of PW-8, solely, for the purpose of coming to the conclusion that Jabeena's death is proved by the prosecution to be homicidal."

22- In State of H.P. v. Jeet Singh², this Court held: (SCC p. 376, para 17)

"**17-** It appears to us that the High Court has totally overlooked the features of the victim which are consistent with the consequence of her having been subjected to smothering. The injuries found on both the legs of the dead body are proof positive that it was a homicidal smothering. We can place reliance on the opinions of both sets of doctors that even without seeing the chemical examiner's report, they could say that death of the deceased might be due to smothering, and after seeing the chemical examiner's report, a doctor could say that poison would also have worked fatally in the victim."





16. हस्तगत प्रकरण में साक्षी पी.डू-9 डॉक्टर कुलदीप सिंह वर्मा ने शव परीक्षण के समय, मृतका की आंखें आधी बंद और आधी खुली होकर स्थिर होना, उसका मुंह बंद होना, कंठ व दारू वाहनी में झागदार खून सहित द्रव उपस्थित होना, उसके दोनों फेंफड़ों पर सूजन व सुकड़न होना एवं जिगर, तिल्ली व गुर्दे सुकड़े होना स्वीकार किया है एवं प्रकरण में यह भी महत्वपूर्ण है कि शव परीक्षण रिपोर्ट में मृतका मुनेश की नाक, होठों, मुंह के कोने, जबड़े पर एवं आंखों की झिल्ली और चेहरे की त्वचा पर छोटे-छोटे पिन की नोक जैसे लाल बैंगनी खून के धब्बे होने बाबत भी कोई तथ्य अंकित नहीं हैं, जिससे भी प्रकरण में मृतका मुनेश का गला दबाकर हत्या करने बाबत अभियोजन कहानी भी संदेह से परे सिद्ध नहीं हो पाई है।

17. हस्तगत प्रकरण में अभियोजन कहानी अनुसार, अपीलार्थी-अभियुक्त द्वारा जरिये फर्द प्रदर्श पी.-2 घटनास्थल तस्दीक करना एवं उससे घटना के वक्त उसकी पहनी हुई खून आलूदा बनियान को जरिए फर्द प्रदर्श पी.-3 जब्त करना बताया गया है, किंतु प्रकरण में उक्त दोनों फर्द के साक्षीगण देवीराम एवं खुशीराम पक्षद्रोही घोषित हुए हैं एवं उन्होंने अपने-अपने बयानों में उनके सामने बलबीर द्वारा घटनास्थल की तस्दीक एवं बनियान बरामद नहीं करवाना एवं उनके खाली कागजों पर पुलिस द्वारा हस्ताक्षर करवाना कथन किया है। इस संदर्भ में यह भी महत्वपूर्ण है कि फर्द तस्दीक घटनास्थल प्रदर्श पी.-2 दिनांक 26-02-2014 को तैयार किया गया है, जबकि अनुसंधान अधिकारी द्वारा दिनांक 24-02-2014 को उक्त स्थल का निरीक्षण कर नक्शामौका प्रदर्श पी.-14 तैयार कर लिया गया था। प्रकरण में यह भी महत्वपूर्ण है कि बनियान पर लगे खून के संदर्भ में भी कोई वैज्ञानिक जांच रिपोर्ट प्रस्तुत नहीं हुई है।

18. हस्तगत प्रकरण में जहां तक विद्वान लोक अभियोजक के इस कथन का संबंध है कि घटना के समय मृतका एवं अपीलार्थी-अभियुक्त घटनास्थल वाले मकान पर साथ-साथ रिहायश कर रहे थे, ऐसी स्थिति में अपीलार्थी-अभियुक्त का यह दायित्व था कि वह उसकी पत्नी की मृत्यु की परिस्थितियों को स्पष्ट करे, किंतु उसके द्वारा उसकी पत्नी की





मृत्यु किन परिस्थितियों एवं कारण से हुई उसको स्पष्ट नहीं किया गया है, जिससे मृतका मुनेश की हत्या करने की उपधारणा उसके विरुद्ध की जावे, किंतु हम उनके उक्त कथन से सहमत नहीं हैं, क्योंकि हमारी विनम्र राय में धारा 106 भारतीय साक्ष्य अधिनियम की उपधारणा किसी मामले में तभी काम में ली जा सकती है, जहां अभियोजन पक्ष द्वारा अपनी साक्ष्य से अपीलार्थी-अभियुक्त के उसकी पत्नी की मृत्यु के समय, उसके साथ घर पर मौजूद होने के तथ्य को युक्तियुक्त संदेह से परे सिद्ध किया गया हो एवं उक्त तथ्य अन्य साक्ष्य से समर्थित भी हो। हस्तगत प्रकरण में पत्रावली पर प्रस्तुत साक्ष्य का इस संदर्भ में अवलोकन करें तो पत्रावली पर अभियोजन पक्ष की ओर से प्रस्तुत किसी भी साक्षी ने घटना के दिन अथवा घटना के वक्त अपीलार्थी-अभियुक्त को घटनास्थल पर उपस्थित होने अथवा उसे मृतका मुनेश के साथ मारपीट करते देखना कथन नहीं किया है। पत्रावली पर अपीलार्थी-अभियुक्त का मोबाइल लोकेशन रिकॉर्ड भी प्रस्तुत नहीं हुआ है, स्वयं अपीलार्थी-अभियुक्त ने अपने धारा 313 दण्ड प्रक्रिया संहिता के बयानों में घटना के समय उसका घर पर नहीं होकर, खेत पर होना कथन किया है, जिससे खण्डन में भी कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं हुई है। अनुसंधान अधिकारी पी.ड.-19 दामोदरसिंह ने अपनी प्रतिपरीक्षा में बलबीर का काश्त करना एवं उस समय फसल का समय होना स्वीकार किया है एवं प्रकरण में मृतका मुनेश की मृत्यु गला दबाकर होना भी युक्तियुक्त संदेह से परे सिद्ध नहीं हुआ है।

19. माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने न्यायिक दृष्टांत **Subramaniam (Supra)** के पैरा नंबर 23 एवं 24 में इस संदर्भ में यह अवधारित किया है कि—

23- So far as the circumstance that they had been living together is concerned, indisputably, the entirety of the situation should be taken into consideration. Ordinarily when the husband and wife remained within the four walls of a house and a death by homicide takes place it will be for the husband to explain the circumstances in which she might have died. However, we cannot lose sight of the fact that although the same may be considered to be a strong circumstance but that by alone in absence of any evidence of violence on the deceased cannot be held to be conclusive. It may be difficult to arrive at a conclusion that the husband and husband alone was responsible therefor.





24- Mr. Kanagaraj has placed strong reliance upon the decision of this Court in Trimukh Maroti Kirkan vs. State of Maharashtra³ wherein it was held: (SCC pp. 692-93, para 18)

18. The question of burden of proof where some facts are within the personal knowledge of the accused was examined in State of W.B. v. Mir Mohammad Omar⁴. In this case the assailants forcibly dragged the deceased, Mahesh from the house where he was taking shelter on account of the fear of the accused and took him away at about 2.30 in the night. Next day in the morning his mangled body was found lying in the hospital. The trial Court convicted the accused under Section 364 read with Section 34 IPC and sentenced them to 10 years' RI. The accused preferred an appeal against their conviction before the High Court and the State also filed an appeal challenging the acquittal of the accused for murder charge. The accused had not given any explanation as to what happened to Mahesh after he was abducted by them. The learned Sessions Judge after referring to the law on circumstantial evidence had observed that there was a missing link in the chain of evidence after the deceased was last seen together with the accused persons and the discovery of the dead body in the hospital and had concluded that the prosecution had failed to establish the charge of murder against the accused persons beyond any reasonable doubt. This Court took note of the provisions of Section 106 of the Evidence Act and laid down the following principle in paras 31 to 34 of the report: (Mir Mohammad Omar case⁴, SCC p. 392)

31- The pristine rule that the burden of proof is on the prosecution to prove the guilt of the accused should not be taken as a fossilised doctrine as though it admits no process of intelligent reasoning. The doctrine of presumption is not alien to the above rule, nor would it impair the temper of the rule. On the other hand, if the traditional rule relating to burden of proof of the prosecution is allowed to be wrapped in pedantic coverage, the offenders in serious offences would be the major beneficiaries and the society would be the casualty.

32- In this case, when the prosecution succeeded in establishing the afore-narrated circumstances, the court has to presume the existence of certain facts. Presumption is a course recognised by the law for the court to rely on in conditions such as this.

33- Presumption of fact is an inference as to the existence of one fact from the existence of some other facts, unless the truth of such inference is





disproved. Presumption of fact is a rule in law of evidence that a fact otherwise doubtful may be inferred from certain other proved facts. When inferring the existence of a fact from other set of proved facts, the court exercises a process of reasoning and reaches a logical conclusion as the most probable position. The above principle has gained legislative recognition in India when Section 114 is incorporated in the Evidence Act. It empowers the court to presume the existence of any fact which it thinks likely to have happened. In that process the court shall have regard to the common course of natural events, human conduct etc. in relation to the facts of the case.

34- When it is proved to the satisfaction of the court that Mahesh was abducted by the accused and they took him out of that area, the accused alone knew what happened to him until he was with them. If he was found murdered within a short time after the abduction the permitted reasoning process would enable the court to draw the presumption that the accused have murdered him. Such inference can be disrupted if the accused would tell the court what else happened to Mahesh at least until he was in their custody.' "

- 20.** परिस्थितिजन्य साक्ष्य के मामलों में अभियोजन पक्ष का यह पुनित दायित्व होता है कि वह प्रकरण में अभियुक्त को आरोपित अपराध से जोड़ने के लिए उसकी प्रत्येक कड़ी को संदेह से परे सिद्ध करे एवं उक्त सभी कड़ियों की श्रृंखला प्रबल, सघन, पूर्ण व अविराम हो, एवं उनसे मात्र यह निष्कर्ष निकले कि मानव संभाव्यताओं की सभी दशाओं में, अपराध केवल और केवल अभियुक्त द्वारा कारित किया गया है, अन्य किसी द्वारा नहीं, परन्तु हस्तगत प्रकरण में, पत्रावली पर जो साक्ष्य/सामग्री अभियोजन पक्ष की ओर से प्रस्तुत की गई है, उसमें अभियोजन पक्ष द्वारा प्रस्तुत समस्त कड़ियां टूटी हुई, बिखरी हुई व असमान हैं, जो हमारी विनम्र राय में अपीलार्थी-अभियुक्त को आरोपित अपराध से पूर्णरूप से नहीं जोड़ती है।
- 21.** अतः पत्रावली पर उपलब्ध साक्ष्य व उभयपक्षों के तर्कों पर मनन के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि विद्वान विचारण न्यायालय ने



जो आलोच्य आदेश दिनांकित 27-09-2019 पारित किया है, वह विधिसम्मत नहीं है, जिससे उक्त निर्णय स्थिर रखे जाने योग्य नहीं है। अतः अपील, अपीलार्थी-अभियुक्त **बलबीर** स्वीकार की जाकर विद्वान विचारण न्यायालय-अपर सेशन न्यायाधीश, लक्ष्मणगढ़, जिला-अलवर द्वारा सेशन प्रकरण संख्या-31/2014, (सी.आई.एस. नंबर-198/2014), उनवानी प्रकरण राजस्थान राज्य बनाम बलबीर में पारित निर्णय एवं दण्डादेश दिनांक-27-09-2019 को रद्द एवं अपास्त किया जाता है। अपीलार्थी-अभियुक्त **बलबीर** को आरोपित अपराध अंतर्गत धारा 302 भा.दं.सं. से दोषमुक्त (बरी) किया जाता है। संबंधित जेल अधीक्षक को इस आशय की तहरीर जारी की जावे कि यदि अपीलार्थी-अभियुक्त अन्य किसी प्रकरण में वांछित ना हो तो उसे हस्तगत प्रकरण में नियमानुसार अविलम्ब रिहा किया जावे।

22. अपीलार्थी-अभियुक्त **बलबीर** को निर्देशित किया जाता है कि वह पचास हजार रुपये का स्वयं का बन्ध-पत्र तथा इसी राशि की एक सुदृढ प्रतिभूति, धारा 437-क द.प्र.सं./481 बीएनएसएस के अनुसार, दोषमुक्त किए जाने के निर्णय की दिनांक से दो सप्ताह के भीतर रजिस्ट्रार (न्यायिक) राजस्थान उच्च न्यायालय पीठ जयपुर के समक्ष इस आशय की पेश करे कि इस निर्णय के विरुद्ध विशेष अनुमति याचिका दायर करने की स्थिति में या अनुमति प्रदान किये जाने की स्थिति में नोटिस की तामिल होने के पश्चात् वह माननीय उच्चतम न्यायालय के समक्ष उपस्थित होगा। उपरोक्त बंध पत्र छः माह के लिए प्रभावी रहेगा।
23. इस निर्णय की एक प्रति विचारण न्यायालय की पत्रावली के साथ विद्वान विचारण न्यायालय को भिजवाई जावे।

(BHUWAN GOYAL),J

(MAHENDAR KUMAR GOYAL),J

29(D-B)/RAHUL

